पत्रकारिता के छात्रों द्वारा सम्पादित

सुरलोक समाचार

हिन्दी संदर्शिका

नई दृष्टि, नए विचार

मई, 2022 पृष्ठ संख्या - 4

>> स्वयं में बदलाव >> युवाओ में पुनर्जागरण >> मै दिल्ली हूँ

परिश्रम ही सफलता की कुंजी

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है। वह सदैव प्रगति के पथ पर चलना चाहता है तथा जीवन में बिना परिश्रम किए प्रगति नहीं हो सकती। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं का आह्वान किया था 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको'। इसका तात्पर्य यह हुआ कि परिश्रम करोगे तभी लक्ष्य की प्राप्ति होगी। कुछ लोग अपनी असफलता के लिए भाग्य को दोष देते हैं, चाणक्य ने विद्यार्थियों के लिए कहा था 'सुखर्थी वा त्याजेत्त विद्याय्य' 'विद्यार्थी वा त्याजेत सुखम' अर्थात सुख चाहने वाले को विद्या का त्याग कर देना चाहिए और विद्या चाहने वालों को सुख का। यह मानव के परिश्रम का ही फल है कि वह आज चांद और मंगल ग्रह जैसे अगमय स्थानों पर पहुंच चुका है। विश्व में अभी तक जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनमें से सभी ने परिश्रम द्वारा ही सफलता प्राप्त की हैं। परिश्रम करने से कठिन से कठिन कार्य भी आसान हो जाते हैं। अतः हमें भीषण परिश्रम कर अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। आज संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है परिश्रम का ही फल है। संसार के महान से महान व्यक्तियों ने अपना जीवन बहुत छोटे रूप से शुरू किया, लेकिन जीवन भर अथक परिश्रम करके व उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच गए। सत्य तो यह है कि संसार के बड़े और महान लोगों ने जीवन में छोटे से छोटा समझा जाने वाला कार्य भी पूरी लगन और श्रद्धा से किया। बोझा ढोने वाला कुल्ली तेनजिंग ही संसार की सबसे ऊंची चोटी एवरेस्ट पर विजय पताका फेहरा सके हैं। सुभाष चंद्र बोस, अब्राहिम लिंकन, गांधीजी घर संसार के असंख्य लोग निरंतर परिश्रम करके ही कहीं ना कहीं पहुंच सके हैं। अथक परिश्रम ही मानव के जीवन का सार है।

जो सोया है वह कलयुग है
जो बैठ गया वह द्वापर है
तू खड़ा हो गया त्रेता है
जो चल पड़ा वह सतयुग है

—दीपा वर्मा

शिक्षा नीति में नई पहल

1968 तथा 1986 के बाद अब 34 साल के बाद नई शिक्षा नीति का आगमन हुआ है। हालांकि 1992 में मामूली संशोधन किया गया था। इस बार की नीति इस लिए भी खास है क्यूंकि इसे बनाने के लिए देश की ग्राम पंचायतों ब्लॉक जनता तथा जिलों से सलाह ली गई । इस बार की एनईपी इसरो के पूर्व चेयरमैन के कस्तूरीरंगन के अध्यक्षता में बनाई गई हैं । एनईपी की घोषणा के साथ ही मानव संसाधन मंत्रालय का नाम बदल कर शिक्षा मंत्रालय रख दिया गया है। इस एनईपी की एक खास विशेषता है कि कम से कम ग्रेड 5 तक की पढ़ाई स्थानीय भाषा में होगी तथा ग्रेड 6 से आधुनिकतम वोकेशनल कोर्स शुरू किए जाएंगे। हालांकि भाषा को लेकर काफी विवाद हो रहा है विरोध कर रहे लोगों का कहना है कि बच्चों पर भाषा को थोपा जा रहा लेकिन इस कमेटी के अध्यक्ष कस्तूरीरंगन का कहना है कि भारत में अंग्रेजी आबादी सिर्फ 15 से 16 प्रतिशत ही है। अधिकतर बच्चे अपने जन्म से ही अपनी मातृभाषा में संवाद करते हैं इसलिए मातृभाषा में पढ़ने से बच्चे अधिक समझ पाएंगे।

नई शिक्षा नीति में अब 10+2 पैटर्न को हटा के 5+3+3+4 का नया पैटर्न लाया गया है। उच्च शिक्षा में भी काफी सुधार किए गए है। अब छात्र अपने विषय खुद चुन सकते है तथा विज्ञान का छात्र कॉमर्स या मानविकी के विषय भी पढ़ सकता है। अंडरग्रैजुएट प्रोग्राम में अब बदलाव किया गया है। मल्टी एंट्री तथा मल्टी एग्जिट का प्रावधान किया गया है ताकि छात्रों को सुविधा हो। बैचलर प्रोग्राम भी चार साल का किया गया है जो बैचलर विड रिसर्च डिग्री होगी। छात्र अगर एक साल पढ़ने के बाद किसी कारण पढ़ाई छोड़ना चाहता है तो उससे सर्टिफिकेट दिया जाएगा तथा 2 साल में डिप्लोमा, 3 साल में डिग्री और अंतिम वर्ष रिसर्च के लिए रखा गया है ताकि अगर छात्र आगे मास्टर्स करना चाहता है तो उसके लिए आसान हो तथा एमफिल को निष्कासित कर दिया गया है। साथ ही उच्च शिक्षा के लिए अब एक सिंगल रेगुलेटर ए भारत उच्च शिक्षा आयोग का गठन किया जाएगा जिसमें यूजीसी तथा एआईसी टी ई का विलय हो जाएगा। इसको सफल बनाने के लिए जादा धन की आवश्यकता होगी इसलिए जीडीपी का 6% देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है । शोध तथा विदेशी विश्व विद्यालयों के यहां केंद्र खोलने का भी प्रावधान है। इसका किर्यनवायान तथा इसमें धन की आवश्यकता इसकी प्रमुख चुनौतियां है । 21 वी सदी में जहा भारत एक उभरता आर्थिक देश बनने को तैयार है वहीं ये शिक्षा नीति देश को आगे बढ़ाने में मदद करेगी।

हालांकि नई शिक्षा नीति मैं काफी वादविवाद और समीक्षा चल रही है जिसमें समय के साथ बदलाव की संभावना हो सकती है हम आशा करते हैं कि नई शिक्षा नीति छात्रों को ज्यादा कुशल व महत्वकांक्षी बनाएगी और स्वरोजगार उत्पन्न करेगी और देश का नाम ओर ऊंचा करेगी।

—शिवम रंजन

नामवर सिंह का आलोचना संसार पर तीन दिवसीय कार्यशाला

नई दिल्ली, 9–11 फरवरी, 2022 श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा 'मंथन' द्वारा "नामवर सिंह का आलोचना संसार" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में कई महत्त्वपूर्ण वक्ताओं जिनमें प्रो. गोपेश्वर सिंह , प्रो. अपूर्वानंद , प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी आदि ने अपने विचार रखें।

इस मौके पर बीज वक्तव्य में श्री अशोक वाजपेयी ने डॉ. नामवर सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि नामवर जी वाद–विवाद और संवाद प्रिय व्यक्ति थे। साथ ही उन्होंने बताया कि नामवर जी ने रामस्वरूप चतुर्वेदी, विजयदेव नारायण साही और देवीशंकर अवस्थी आदि के साथ मिलकर आलोचना को समकालीन रचना का समवर्ती और सहचर बनाया।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में कवि मदन कश्यप ने अपने विचार रखते हुए कहा कि नामवर जी उन अर्थों में मार्क्सवादी आलोचक नहीं है जिन अर्थों में रामविलास शर्मा है या शिवदान सिंह चौहान है। जबकि नामवर सिंह स्वर संवादी थे। प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों को समझाया और नामवर सिंह जी के कार्यो और उनसे जुड़े साहित्य के इतिहास को सामने रखा।

द्वितीय सत्र में प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि भाषा, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में नामवर सिंह ने दूसरी परंपरा की खोज की, जिसे लोग हमेशा याद करते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य के निर्माण में अपभ्रंश और प्रतिरोध की संस्कृति की क्या भूमिका है इसकी खोज भी नामवर जी ने ही की थी। कविता के नए प्रतिमान नामक पुस्तक को प्रो तिवारी ने सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में नामवर सिंह ने कविता के जिन नए प्रतिमानों को रेखांकित किया है उनकी दृष्टि में वे यथार्थवादी कविता के प्रतिमान है। इस पुस्तक की की चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि कविता के नए प्रतिमान के केन्द्र में मुक्तिबोध है। इस पुस्तक का आधार वह धारणा है कि नयी कविता में मुक्तिबोध की स्थिति वही है जो छायावाद में निराला की थी। नामवर सिंह के काव्यालोचना पर चर्चा करते हुए इस पुस्तक पर उन्होंने विस्तृत वक्तव्य दिया। श्री तिवारी ने काव्य के प्रतिमानों को रेखांकित करते हुए कहा कि नामवर सिंह ने अपनी इस पुस्तक में काव्य– भाषा की विशिष्टता, काव्य बिम्ब और सपाटनवानी, नाटकीय काव्य संरचना, विसंगति और विडंबना, अनुभूति की जटिलता और तनाव तथा ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति को कविता के नए प्रतिमान माना है। नामवर सिंह के व्यक्तित्व और आलोचना कर्म पर अपना वक्तव्य देते हुए प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह ने कहा कि नामवर सिंह साहित्य के सैलिडिटी आलोचक है। अज्ञेय के बाद हिंदी संसार की हलचलों के केंद्र में नामवर सिंह ने अपनी जगह बनाई। यह पहली बार हुआ कि हिंदी का कोई आलोचक साहित्य का केन्द्रीय व्यक्तित्व बना। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि नामवर सिंह ने अपने लेख से हिंदी भाषी जनता को जितना शिक्षित किया उससे अधिक अपने व्याख्यानों के जरिए उन्होंने यह काम किया। व्याख्यानों की संख्या बढ़ती जा रही थी जिसे देखते हुए विरोधियों में व्यंग्य में उन्हें श्वाधिक परंपरा का आलोचक कहना शुरू किया ऐसा कहने वालों की मंशा यह होती थी कि नामवर सिंह लिखते नहीं, सिर्फ बोलते हैं। लेकिन आगे चलकर प्रशंसक ही नहीं, विरोधी भी यह महसूस करने लगे कि व्याख्यान भी जनता के बौद्धिक शिक्षण का एक माध्यम है। प्रो. सिंह ने नामवर जी की कृतियों को याद करते हुए कहा कि 'छायावाद' तथा 'इतिहास और आलोचना' से नामवर सिंह के 'कहानी आलोचक व्यक्तित्व की पहचान बनी।

वहीं नई कहानी और 'कविता के नए प्रतिमान' के जरिए वे आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। दूसरी परंपरा की खोज से वे हिंदी आलोचना की बहस के केंद्र में वर्षों तक बने रहे। वाद–विवाद–संवाद के जरिए उन्होंने अपने विवादप्रिय आलोचक व्यक्तित्व को बनाए रखा। 'आलोचना' पत्रिका का कई दशकों तक उन्होंने संपादन किया और नई आलोचनात्मक समझ का विकास किया। इन सब कामों के जरिये हिंदी आलोचना को भारतीय सन्दर्भों के साथ वैश्विक साहित्यिक समझ से जोड़ने और नई पीढ़ी के आलोचकों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करने में नामवर सिंह का ऐतिहासिक योगदान है। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रो चोथी राम यादव ने कहा कि डॉ. नामवर सिंह का नाम हिन्दी साहित्य में एक नई विमर्श का नाम है। उन्होंने साहित्य जगत को आलोचना और संस्कृति के प्रति नए विमर्श दिए। उन्होंने आलोचना के माध्यम से सामाजिक सरोकार को पूर्ण करने का प्रयास अपनी लेखनी के माध्यम से किया। उनकी कृति और लेख समसामयिक वैचारिकी और साहित्य को उन्नत करने वाली है। कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 80 सालों से प्रमुख आलोचकों की श्रेणी में नामवर सिंह का नाम इसलिए शामिल है, क्योंकि उन्होंने साहित्य जगत को नए लेखक और साहित्यकारों को एक नई संस्कृति दी। उनकी आलोचना धर्मिता समसामयिक थी, हजारी प्रसाद द्विवेदी की परंपरा को उन्होंने विकसित किया। उनकी आलोचना क्षेत्र का विस्तार आदिकालीन साहित्य में होते हुए मध्यकालीन और आधुनिक साहित्य तक है। जिसमे स्वातंत्र्योत्तर कथा समीक्षा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। कथा विधा को समझने के लिए नामवर सिंह ने नए मानकों को स्थापित किया है।

इस मौके पर प्रो. संजीव कुमार ने नामवर सिंह और हिंदी साहित्य की पत्र–पत्रिकाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए । कार्यक्रम में मौजूद द्वितीय वक्ता प्रो. अपूर्वानंद जी ने नामवर सिंह के विभिन्न व्याख्यान की दूरदृष्टिता का वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में विस्तार पूर्वक बखूबी वर्णन किया। उन्होंने बताया कि नामवर सिंह अपनी युवावस्था से ही काफी अच्छे आलोचक रहे हैं। इस बात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे उस समय के स्थापित आलोचकों की भी आलोचना करने से भी पीछे नहीं हटे, वह काफी गहन अध्ययनशील व दूरशख्सियत दृष्टि के व्यक्ति रहे। साथ ही वे हमेशा नयेपन को लेकर काफी उत्सुक रहते थे, वह साहित्य में नयापन चाहते थे। उन्होंने कहा कि मैं हिंदी साहित्य में कविता लेखन के लिए आया था मगर जब इसमें इतनी गंदगी देखी तो मैंने झाड़ू उठा ली और यह झाड़ू अभी तक नहीं छुटी। वह कहते हैं कि संपादक का एक मात्र मुख्य कार्य सफाई करना है ताकि समाज में भाषा का पैनापन बना रहे और शुद्ध भाषा का प्रचार हो। साहित्य भाषा तभी कामयाब होगी जब समाज विवेक संपन्न होगा। इसी के साथ उन्होंने जनतंत्र, समाज आदि पर भी काफी गंभीरता से अपने विचार रखें।

उन्होंने आने वाले हिंदी साहित्य के युवाओं को कहा है कि ऐसा ना लिखे जिससे फासीवादी व्यवस्था को मदद मिले। भाषा को धर्मनिरपेक्ष बनाए। कार्यक्रम समापन पर प्रो. निर्मला जैन ने नामवर सिंह के शुरुआती जीवन व उनकी शिक्षा–दीक्षा, विचार आदि पर अपने अनुभव को साझा किये।

स्वयं में बदलाव

हम सभी बदलाव चाहते हैं क्योंकि कोई भी समाज पूर्ण नहीं है। अच्छा समाज बनाने के लिए हम सभी के पास कई विचार होते हैं लेकिन यह तभी संभव है जब लोग बदलना चाहे हम सभी दूसरों को सलाह देने में अच्छे होते हैं लेकिन शायद ही कभी खुद में बदलाव को लागू करते हैं। भारतीय कवि और रामचरितमानस के रचनाकार तुलसीदास जी ने कहा है 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' अर्थात ज्यादातर लोग दूसरों को सलाह देने में विशेषज्ञ होते हैं। लोग चाहते हैं कि अन्य बदल जायें लेकिन खुद को न बदलना पड़े। हमारे समाज में कई समस्याएं हैं और हम चाहते हैं कि यह बेहतर हो। लेकिन हमें उसके लिए सबसे पहले स्वयं को बदलने की जरूरत है। उदाहरण के लिए भारत दुनिया के सबसे भ्रष्ट देशों में से एक माना जाता है और सभी भारतीय भ्रष्टाचार से मुक्ति चाहते हैं। लेकिन वही लोग जब सरकार में होते हैं तो नागरिकों के वैध काम करने के लिए भी रिश्वत लेने में संकोच नहीं करते हैं। आम लोग, भ्रष्टाचार के कृत्यों की रिपोर्ट करने के बजाय रिश्वत देना पसंद करते हैं। ट्रैफिक नियमों का उल्लंघन करते हुए पकड़े जाने पर ट्रैफिक उल्लंघन करने वालों को ट्रैफिक पुलिस को रिश्वत देते देखना सामान्य बात है। बिना टिकट वाले यात्रियों को आरक्षित डिब्बे में यात्रा करने और यात्रा करने के लिए यात्रा टिकट परीक्षक (टीटीई) को रिश्वत देते भी देखा जा सकता है। व्यवसायी ईमानदारी से अपने करो का भुगतान करने के बजाय अक्सर इससे बचना पसंद करते हैं और टैक्स अधिकारियों को रिश्वत देकर संरक्षित रहते हैं। अपराधी से रिश्वत लेने के बाद पुलिसकर्मी अक्सर अपराध के गंभीर मामलों से संबंधित जानते हैं।

अगर हम समाज को बदलना चाहते हैं तो हमें पहले खुद को बदलना होगा। हम किसका इंतजार कर रहे हैं? पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सलाह दी है 'यदि हम किसी अन्य व्यक्ति की प्रतीक्षा करते हैं या यदि हम किसी अन्य समय की प्रतीक्षा करते हैं तो परिवर्तन नहीं आएगा। हम ही वह हैं जिसका हम इंतजार कर रहे हैं। जिस परिवर्तन को हम चाहते हैं वह परिवर्तन हम ही है।'

दूसरों को बदलना मुश्किल है। लेकिन अगर हम निश्चय कर लेते हैं तो खुद को बदलना सबसे आसान होता है। हम इस बात का संकल्प ले सकते हैं कि हम इस क्षण से हो ईमानदार सत्य और कानून का पालन करेंगे। जब हम बदलते हैं तो हमारे आसपास सब कुछ बदलना शुरू हो जाता है। जब हम दूसरों के लिए अच्छे हो जाते हैं तो लोग हमारे लिए अच्छे हो जाते हैं और हम जल्द ही एक बेहतर दुनिया का निर्माण करने लगते हैं। प्रसिद्ध सूफी कवि रूमी ने कहा है ष्कल मैं चतुर था इसलिए मैं दुनिया को बदलना चाहता था। आज मैं समझदार हूँ, इसलिए मैं अपने आप को बदल रहा हूँ।'

जब हम बदलते हैं तो हम कई अन्य लोगों को बदलने के लिए प्रेरित करते हैं और इस तरह एक बेहतर दुनिया का निर्माण करते है। खुद अच्छे बनकर हम दूसरों के लिए रोल मॉडल बन जाते हैं। भगवान कृष्ण ने परिवर्तन की शक्ति के बारे में बताया है जो हमारे द्वारा सही काम करके प्राप्त किया जा सकता है। 'एक महान व्यक्ति द्वारा जो भी कार्य किया जाता है आम लोग उसके नक्शेकदम पर चलते हैं और अनुकरणीय कृत्यों के द्वारा वह जो भी मानक तय करता है सारी दुनिया उसका अनुगमन करती है।

दूसरों में बदलाव लाने से पहले स्वयं में बदलाव लाना जरूरी है ताकि समाज को बदलने की जरुरत ही ना पड़े और वह स्वयं बदल जाये।

फिल्मी नायक वीएफएक्स VFX

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगा की फिल्म का असली नायक वीएफएक्स ही होता है। वीएफएक्स यानी कि विजुअल इफेक्ट्स इसमें एडिटिंग सॉफ्टवेयर के माध्यम से जो चीज असल में नहीं है उसे प्रदर्शित करने का कार्य किया जाता है जिससे देखने वाले को वह शॉट एकदम रियल नजर आते हैं। एक शानदार कैरियर ऑप्शन के रूप में भी उभरा है। आपने फिल्मों में बादलों के बीच उड़ते हुए हीरो, हिरोइन , हवा में उड़ती हुई कारें, खतरनाक जानवरों से लड़ते हुए इंसान, भूकंप के कारण गिरती हुई बड़ी–बड़ी बिल्डिंग, आसमान में क्रेश होता हुआ प्लेन तो जरूर देखा होगा। यह सब वीएफएक्स नामक बला का ही कमाल है। ये रोमांचक और खतरनाक सीन वीएफएक्स एनीमेशन की मदद से ही सम्भव हो पाते हैं। हाल फिलहाल में आई फिल्में आर आर आर, बाहुबली में अच्छा वीएफएक्स का इस्तेमाल किया गया है।

वीएफएक्स का भविष्य

अगर हम भारत के संदर्भ में वीएफएक्स का भविष्य देखें तो आज से लगभग 10 साल पहले भी हिंदी की कुछ फिल्में जिनमें कृष, रोबोट, रा–वन में वीएफएक्स का अच्छा काम किया गया है। हाल फिलहाल में आई फिल्मों में बाहुबली, आर आर आर में वीएफएक्स को लेकर चर्चाएं और तेज होने लगी वह इनके भविष्य की संभावनाएं भी बढ़ने लगी है फिल्म निर्माताओं को भी अब समझ में आने लगा है कि वीएफएक्स उन्हें अच्छा रिटर्न दे सकता है। क्योंकि औसतन यह कई रियल शूट की तुलना में सस्ता पड़ता है। इसलिए छोटी फिल्में में भी इसका इस्तेमाल बड़ा। इससे आने वाले वक्त में शूटिंग कास्ट भी कम होने की उम्मीद है। आज हर बड़ी फिल्म में एक बड़ा हिस्सा वीएफएक्स का रहता ही है अब बजट का कितना प्रतिशत वीएफएक्स पर खर्च होता है यह अलग–अलग शैली व फिल्मों के आधार पर तय होते हैं औसतन फिल्म की कुल प्रोडक्शन लागत का लगभग 15 से 20 फीसदी तक वीएफएक्स पर इस्तेमाल होता है। आजकल छोटे बजट की फिल्में में वीएफएक्स का उपयोग कर रही हैं। भारतीय सिनेमा में लगभग 80 फीसदी फिल्में ऐसी हैं जिनमें वीएफएक्स का इस्तेमाल हो रहा है। फिल्म आरआरआर की बात करें तो इस फिल्म में छोटे–बड़े 2800 से भी अधिक वीएफएक्स शॉट लिए गए हैं। अब तो वीएफएक्स का इस्तेमाल दूसरे सेक्टर्स में भी हो रहा जैसे प्रेजेंटेशन में गेमिंग में इसलिए आने वाले वक्त में वीएफएक्स की अच्छी मांग रहने वाली है।

इस क्षेत्र की जरूरत व मांग को समझते हुए, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2022 में बजट सत्र में (एनिमेशन, विजुअल इफेक्ट, गेमिंग एवं कॉमिक्स पॉलिसी की घोषणा की। इसके तहत एक टास्क फोर्स जमीनी स्तर पर प्रतिभाओं की तलाश करके किस तरह उन्हें वैश्विक स्तर के लायक बनाया जा सकें, इस पर अपनी रिपोर्ट पेश करेगी। वही डेलोइट इंडिया ने भारत सरकार के इस प्रयास से 20 लाख नौकरियां पैदा होने की उम्मीद जताई है।

इस क्षेत्र में भविष्य बनाने वाले युवाओं के लिए काफी व्यापक व सुनहरा अवसर है जो लोग इस क्षेत्र में भविष्य बनाने की सोच रहे हैं तो 12वीं के बाद ही वीएफएक्स में सर्टिफिकेट, डिग्री और डिप्लोमा जैसे कोर्स निम्न संस्थान से भी कर सकते है। जिनमें प्रमुख नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, जामिया मिलिया इस्लामिया, जी इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव आर्ट्स, बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी इत्यादि।

–मोहम्मद हमजा

बदलती मानवता और उसके मापदंड

यह विषय बेहद ही संजीदा और नया है। हम सभी अपनी जिंदगी जी तो रहे हैं लेकिन जीत नहीं पा रहे। इसके बहुत से कारण हो सकते हैं तथा यह है एक गहन बौद्धिक विमर्श का मसला भी बनता जा रहा है। अगर बात करें हम सफल जिंदगी की तो वह केवल रोटी, कपड़ा, मकान की आपूर्ति को नहीं कहा जा सकता क्योंकि कोई भी जिंदगी बिना मानवता के जिंदगी हो ही नहीं सकती।

अब बात आती है कि मानवता क्या है और आज के समय में क्या बदलाव हुआ है मानव के दृष्टिकोण एवं उसके बर्ताव में । सबसे पहली बात सहनशक्ति का कम होना। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार होना।

सामाजिक जीवन शैली से निजी जीवन शैली का होना। भावनात्मक की जगह मूल्यात्मक संबंध होना।

आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं जो भागदौड़ का तो है पर किसी से दो घड़ी उनके हालचाल पूछने का नहीं। जो क्लब मेंए पार्टी मेंए स्पा मेंए होटल मेंए खुशी तलाशते हैं। आज खुशी के भी अलग मापदंड हो चुके हैं।

कोई भी अपने गांव जहाँ जमीनी स्तर से जुड़कर खुश नहीं है। जहां पहले जन्मदिन पर घर में खीर पूरी बन के सभी रिश्तेदारों को बुलाकर भगवान को भोग लगाकर सब को एक साथ खिलाया पिलाया जाता था वह चीज तो आज पूरी तरह से खत्म हो चुकी है। आज हम अपना छोटा सा जन्मदिन भी किसी होटल में या किसी जानी– मानी जगह मनाना पसंद करते हैं और उससे भी बड़ी बात कि उस में अधिकतर अपने दोस्तों को ही बुलाना पसंद करते हैं रिश्तेदारों का तो हम आजकल सोचते तक नहीं। फिर अगर बात की जाए सहनशक्ति की तो सहनशक्ति कोई पैदाइशी शक्ति नहीं है यह है परिस्थिति, परिवार और संस्कार पर निर्भर करती है। पहले अधिकतर घरों में 4 से 5 या उससे भी ज्यादा बच्चे या भाई– बहन हुआ करते थे उसके बावजूद भी वह लोग बहुत अच्छे से रहते थे और समानता हुआ करती थी। आज निम्न से लेकर समृद्ध वर्ग तक एक या दो से अधिक बच्चे नहीं हुआ करते जिस में भी उनके लिए अलग.अलग प्रकार की सारी सुख सुविधाएं माता पिता उन्हें पूर्ण रूप से देने की कोशिश करते हैं। यह तो एकमात्र बीज है जो हमने कम सहनशक्ति का शुरू से ही दे दिया होता है। जहाँ से बच्चे को केवल अपने अपने सामान एवं अपनी जिंदगी में जीने की आदत पड़ जाती है यह चीज आगे उनकी व्यक्तिगत कमजोरी बन जाती है जिसके परिणाम स्वरूप कम सहनशक्ति आजकल के बच्चों में देखना आम बात है।

आज हम खुद इतना व्यस्त होते जा रहे हैं कि हमारे पास समय ही नहीं है किसी की परेशानी को सुनने का या उसे दूर करने का वास्तविकता यह है कि जब तक हम किसी की परेशानी दूर नहीं करते हम खुद भी ताउम्र परेशानियों से जूझते रहते हैं। आपने एक दोहा अवश्य सुना होगा ष्भला किसी का कर ना सको तो बुरा किसी का मत करना।ष परंतु आज इसकी हम एक अलग व्याख्या आपको बता रहे हैं ष्बुरा किसी का करो ना करो पर भला किसी का जरूर करनाष्। तात्पर्य यह है कि मानवता को जिंदा रखने के लिए खुद को वास्तविक में इंसान कहलाने के लिए आत्म संतुष्टि के लिए और एक सफल जीवन के लिए किसी के जीवन में भला करना उसी प्रकार जरूरी है जिस प्रकार भगवान श्री कृष्ण स्वयं अयोध्या के राजकुमार और नारायणी सेना के स्वामी और स्वयं श्री हरि अवतार होते हुए भी पांडवों के साथ सब कुछ त्याग कर वनों में भटकते रहे। इसका एकमात्र तात्पर्य यह है कि आपके पास तमाम सुख सुविधा है एवं आप अपनी जीवनशैली बहुत सुखद पूर्वक बिता रहे हैं ऐसी कोई चीज नहीं जो आप चाहें और आपको ना मिल सके तो भी आपका यह परम कर्तव्य बनता है कि आप किसी की मदद करें ज्यादा नहीं तो इतनी जिसमें आपको कुछ फर्क ही ना पड़े आइए इस बात को उदाहरण से समझते हैं।

अगर आपकी बौद्धिक क्षमता बहुत है तो अगर आप किसी अनाथ बच्चे को या किसी भी बच्चे को शिक्षा दें तो इससे यह आपकी घटेगी नहीं परंतु आप मानवता के लिए कुछ कर जाएंगे ठीक उसी प्रकार अगर आप पर इतना धन है जिसमें से अगर आप थोड़ा भी किसी को दे दे तो आपको जरा भी फर्क नहीं पड़ेगा तो जरूर दान करें।

अतः कहने का मतलब यह है कि आपके पास जो है जो भरपूर मात्रा में है और जिसके देने से आपको कोई खास फर्क नहीं पड़े उसके लिए अधिक होकर सोचकर मजबूत होकर बिना सोचे किसी के लिए कुछ कर जाना ही मानवता कहलाती है। और जब हम यह सब करते हुए एक आदर्श मनुष्य की श्रेणी में आ जाते हैं तब हम कुछ ऐसा भी कर गुजरते हैं जो मानवता के लिए मिसाल बन जाता है जैसे कि मदर टेरेसा, नेल्सन मंडेला आदि उदाहरण है।

इसीलिए मेरा आप से यह अनुरोध है कि मानवता को जिंदा रखें जितना हो सके दिल खोल कर जियो और दिल खोल कर मानवता के लिए कुछ करें ।

–कनिष्का शर्मा

शक्ति के लिए नहीं बल्कि सहनशक्ति के लिए दंड

ठंड की आलसी भोर। खिड़की के अंधखुले करीने से धूप की एक लंबी लकीर अंधेरे कमरे में आ रही है। उसी अंधेरे कमरे में एक लड़की कुछ पढ़ रही है। उसने किताब को खिड़की के पास कुछ इस तरह रखा हुआ है कि धूप का जो भी टुकड़ा कमरे में प्रवेश कर पा रहा है। उस किताब पर ही सिमट जा रहा है। इतनी प्रकाशित किताब शायद ही कभी किसी ने देखी होगी। करीब से देखने पर किताब पर छपा था इतिहास. कक्षा 10 अच्छा! तो यह 10वीं की विद्यार्थी है और कुछ ही महीनों में होने वाले बोर्ड की परीक्षा की तैयारी में इतना तल्लीन है। पर पढ़ाई तो वह कमरे की बत्ती भी जलाकर कर सकती है। उसकी टेबल के ठीक ऊपर एक लंबी ट्यूबलाइट दीवार पर दिख तो रही है। इसका उत्तर भी जल्दी ही मिल गया। धूप का वह टुकड़ा जो शायद उस लड़की की ही नींद खोलने के लिए पर्याप्त नहीं था न जाने कैसे उसके बगल में सोए हुए 12 –13 साल के उसके भाई की नींद खोल देता है। वो तिलमिला कर उठता है और उस लड़की की किताब छीन दूर फेंक देता है। वह उस किताब में इतना तल्लीन रहती है कि उसे कुछ समझ ही नहीं आता। बस वह प्रतियुत्तर में नींद में डूबे अपने भाई को एक जोर का तमाचा जड़ देती। उसका भाई रोता हुआ दूसरे कमरे में चला जाता है।

आश्चर्य है दो–तीन घण्टे तक इस क्रिया पर कोई प्रतिक्रिया उस घर में नहीं हुई। लगभग 9 बजे जब घर से किसी पुरुष के बाहर जाने की आवाज सुनाई पड़ती है। ठीक अगले ही क्षण उसके सामने उसकी मां और भाई खड़े दिखते हैं। उसकी मां की आंखें गुस्से से बिल्कुल लाल मुझे नहीं पता था कि कभी पढ़ाई करने के लिए इतने क्रोध का कोपभाजन बनना पड़ सकता है लेकिन इस लड़की के साथ ऐसा ही है। अभी तक मैंने इस लड़की को इसका नाम न लेकर लड़की ही इसलिए कहा है क्योंकि नाम व्यक्तिवाचक हो जाता है और इसकी स्थिति अतिसामान्य जातिवाचक है। इसकी कहानी में कुछ इतर नही है। वही अतिसामान्य कहानी कहा जाता है कि स्त्रियों की दुश्मन स्त्रियां ही तो होती हैं ठीक वही स्थिति है। लड़का जब पढ़ने में अच्छा होता है तो माताओं को खुशी होती है। लड़की जब पढ़ने में अच्छी होती है तो माताओं को चिंता घेर लेती है। यदि लड़की पढ़ने लगेगी तो विवाह के लिए तैयार नहीं होगी। इसमें पिता का योगदान आज के समय में बहुत कम है। जब अपनी खुद की पुत्री की बात हो तो एक पिता से ज्यादा स्त्रीवादी कोई नहीं होता। आज अपने भाई पर अपनी विद्याविभूत शक्ति दिखाने के लिए उसकी मां ने उसकी किताब को ही अग्नि के मुख में धकेल दिया।

लेकिन आज अग्नि की ज्वालाएं सिर्फ किताब के पन्नों में ही नहीं उसकी आँखों में भी जल रहीं थी। अब बस वह अपने पिता का इंतजार कर रही थी जब वह आये तो उसके अंदर का ज्वार जैसे फट सा गया हो। उसने आज तक अपने पर बीते सभी दुराचारों का खुलासा उनके सम्मुख कर दिया। उन्होंने कुछ खास उत्तेजित प्रतिक्रिया नहीं दी। हालांकि अपनी स्त्री के प्रति क्रोध उनकी आंखों में स्पष्ट झलक रहा था। पर फिलहाल उन्होंने अपनी पुत्री को समझाना ज्यादा जरूरी समझा। उन्होंने उससे कहा जानती हो! तुमपर अभी तक जो कुछ भी बीता वह तुम्हारे पढ़ने की इच्छा शक्ति की वजह से नहीं बल्कि तुम्हारी सहनशक्ति की वजह से बीता है' वर्षों से समाज स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए दंड देता आ रहा है।'

– शिवम् सिंह

'सुमन एक उपवन के'

हम सब सुमन एक उपवन के
एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्मे हम
मिली एक ही धूप हमें हैं
सीचे गए एक जल से हम
पले हुए हैं झूल. झूलकर
पल्लू में हम एक पवन के
हम सब सुमन एक उपवन के
सूरज एक हमाराएजिसकी
किरणों उर की कली खिलती
एक हमारा चांद– चांदनी
जिसकी हम सबको नहलाती
मिले एक से स्वर हमको है
भवरों के मीठे गुंजन के
हम सब सुमन एक उपवन के
रंग रंग के रूप हमारे
अलग.अलग है क्यारी. क्यारी
लेकिन हम सब से ही मिलकर
है उपवन की शोभा सारी
एक हमारा माली हम सब
रहते नीचे एक गगन कैद
हम सब सुमन एक उपवन केद
कांटो में खिलकर हम सब ने
हंस.हंसकर है जीना सीखाए
एक सूत्र में बांधकर हमें
हार गले का बनना सीखा
सबके लिए सुगंध हमारी
हम श्रृंगार सिंगार धनी निर्धन के
हम सब सुमन एक उपवन के

शख्सियत से मुलाकात : ममता कालिया

नई दिल्ली, 27 जनवरी, 2022 श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज के हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की हिंदी साहित्य सभा मंथन द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'शख्सियत से मुलाकात' श्रृंखला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस बार कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में ममता कालिया (कथाकार, शिक्षक और कवि) रहीं।

ममता कालिया जी ने अपने जीवन के बारे में बताते हुए कहती है कि मेरी प्रारंभिक शिक्षा गाजियाबाद के कान्वेंट स्कूल से आरंभ हुई। मैंने शिक्षा की शुरुआत अंग्रेजी माध्यम से की। पिता

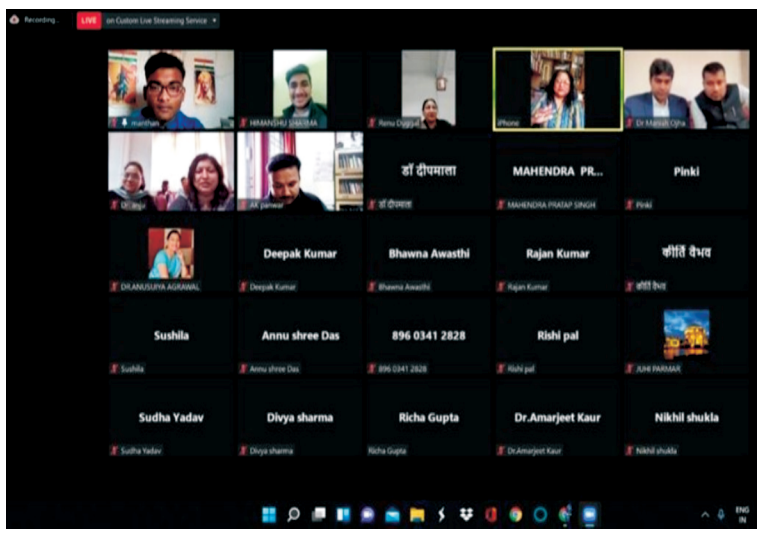

के बार–बार तबादले के कारण अपनी स्कूली पढ़ाई गाजियाबाद, दिल्ली, नागपुर, मुंबई, पुणे, इंदौर के विद्यालयों में ग्रहण की। इंदौर के विक्रम विश्वविद्यालय से सन 1961 में बी.ए की परीक्षा उच्च श्रेणी में उत्तीर्ण की और दिल्ली विश्वविद्यालय से सन 1963 में अंग्रेजी साहित्य मैं एम. ए. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद दौलतराम कॉलेज, दिल्ली में प्राध्यापक की नौकरी मिली। वह आगे बताती है कि चंडीगढ़ की एक साहित्यिक गोष्ठी में ममता जी की भेंट रवीन्द्र कालिया जी से हुई। रवीन्द्र जी और ममता जी दोनों एक–दूसरे के व्यक्तित्व से इतने प्रभावित हुए कि 12 दिसम्बर, 1964 में प्रणय सूत्र में बंध गए। शादी के समय रवीन्द्र जी टाइम्स ऑफ इण्डिया में कार्यरत थे। विवाह समारोह में हिन्दी साहित्य जगत के बहुचर्चित रचनाकार जेनेंद्र, मोहन राकेश, कमलेश्वर, प्रभाकर माचवे, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि शामिल हुए थे। ममता जी ने अपने पति रवीन्द्र जी के लिए अपना भविष्य अनेक बार दाँव पर लगाया।

उन्होंने अपने वैवाहिक जीवन में अथाह संघर्ष और कष्ट का सामना किया। नौकरियाँ छोड़ी, परन्तु अडिग रहीं अपने पति के कदम–से–कदम तथा कंधे से–कंधा मिला कर चली। कभी भी आत्म–विश्वास कम न होने दिया। 'रवीन्द्र जी ने 'धर्मयुग' की नौकरी से इस्तीफा दे, साझेदारी में प्रेस की शुरुआत की, मगर 'स्वाधीनता प्रेस' ने उन्हें सड़क पर ला खड़ा कर दिया। इस वजह से रवीन्द्र जी मुंबई से इलाहाबाद वापस आ गए तो ममता जी भी नौकरी छोड़कर इलाहाबाद आ गई।

ममता जी आगे बताती हैं कि बचपन से ही उनको साहित्यिक परिवेश मिला। पिता हिन्दी और अंग्रेजी विषय के साहित्य में रूझान रखते थे और उनके चाचा भारत भूषण अग्रवाल उस समय के प्रख्यात साहित्यकार थे। बी.ए. की पढाई के दौरान ही ममता जी ने कविताएँ लिखना आरंभ कर दिया। 'जागरण' अखबार के रविवारीय अंक में पहली कविता 'प्रयोगवाद प्रियतम' छपी। ममता जी 1960 से ही साहसी और उत्तेजक कविताओं की रचना की। इन कविताओं ने सभी साहित्यकारों का ध्यान आकर्षित कर लिया। ममता जी के आरंभिक कविताओं में आक्रोश प्रतीत होता है। इस मौके पर ममता कालिया जी अपनी रचनाओं और नवीन साहित्यिक प्रयोग के कारणों की बात की और समाज के विभिन्न पक्ष की बात की।

युवाओं में पुनर्जागरण

सुबह की पहली किरण के साथ भारतीय युवा भी उठने की कोशिश करता है लेकिन उठ नहीं पाता है। अलार्म सुबह के 5.00 बजे का लगता है लेकिन उठता 9.00 बजे है। बस उठकर नाश्ता करके और थोड़ा फोन चला कर द्वारा दोबारा सो जाना हैं। इससे अच्छा तो यही है कि नाश्ते के बाद सोने वाली प्रक्रिया पहले ही कर ली जाए और नाश्ता बाद में। आजकल ज्यादातर घरों में युवाओं की यही कहानी है, लेकिन सोचने की बात यह कि इसमें गलती किसकी है?

भारतीय इतिहास में युवा सबसे महत्त्वपूर्ण रहा है, वह चाहे क्रांति के लिए हो या शांति के लिए, उसने अपना प्रमुख योगदान दिया है। लेकिन वर्तमान में युवा की स्थिति कुछ भिन्न नजर आती है। जिस युवा को भारत की डोर पकड़ कर उसे अपने उद्देश्य तक पहुंचना चाहिए वही युवा अपना ही उद्देश्य भूल गया है तथा भटक कर देश के हित की बजाय अपने हित में लग गया है। समय का सदुपयोग करने की जगह उसका दुरुपयोग कर रहा है। गलती किसकी है, सरकार की, युवा की, सिस्टम की।

गलती किसकी है इसकी परिकाष्ठा करना कठिन है लेकिन कारक क्या है यह पता लगाया जा सकता है। पहला कारक शिक्षा का अभाव कहा जा सकता हैं, भारतीय युवा में शिक्षा का अभाव बहुत बड़ा दिखता है। शिक्षा का मतलब डिग्री से नहीं बल्कि उसके अनेक आयामों से है। शिक्षा लेने के बाद भी युवा अशिक्षित है और इसके परिणाम स्वरूप बेरोजगार है तथा अपने उद्देश्य से भटका हुआ है।

दूसरा कारक सरकार की गलत नीतियां कहा जा सकता है। सरकार की नीति भी एक कारक है जिसकी वजह से युवा बेरोजगार तथा लक्ष्यहीन हैं। सरकार शिक्षा में बदलाव तो लाना चाहती है लेकिन उसको संपूर्ण ढंग से लागू नहीं करना चाहती। उदाहरण नई शिक्षा नीति नौकरी तो लाती है लेकिन उनकी भर्ती ढंग से नहीं करती जैसे एसएससी, सीजीएल की परीक्षाएं, शिक्षक भर्तियां, पुलिस भर्तियां इत्यादि और भी अनेक कारक है। न समय पर परीक्षाएं होती है और न समय पर परिणाम आते है और जल्दी कुछ हुआ भी तो पेपर लीक का मामला सामने आ जाता हैं।

तीसरा कारक समय पर युवा को रोजगार न मिलना भी कह सकते हैं। समय पर रोजगार न मिलने के कारण युवा अपने रास्ते से भटकता है तथा किसी और रास्ते पर चलने लगता है। उदाहरण एक स्नातक (ग्रेजुएट) छात्र को उसके स्नातकोत्तर पर ही रोजगार मिल जाना चाहिए। लेकिन रणनीतियों के परिणाम स्वरूप वह दूसरी शिक्षा की ओर भागता है तथा उसमें भी सफलता न मिलने पर तीसरी शिक्षा की ओर। इस प्रकार वह अपना समय नष्टकर वह बेरोजगार और लक्ष्यहीन श्रेणी में पहुंच जाता है। ऐसी ही अनेक कारक है जो आए दिन हम देखते हैं। सभी कारकों को इस लेख में समाहित नहीं किया जा सकता लेकिन इन्हीं कारकों के आधार पर कल्पना की जा सकती है कि भारतीय युवा किन परिस्थितियों से गुजर रहा है तथा भटके हुए रास्तों पर जाने को मजबूर है या फिर अपनी फोन के 1.5 जीबी डाटा के साथ खुश है।

–शिवम रंजन

शख्सियत से मुलाकात : प्रो. रोहिणी अग्रवाल

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की हिंदी साहित्य सभा मंथन द्वारा 23 फरवरी, 2022 को आजादी का अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में शख्सियत से मुलाकात कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप मंश वरिष्ठ आलोचक प्रो. रोहिणी अग्रवाल रहीं।

प्रो. रोहिणी अग्रवाल ने अपने जीवन से जुड़े कई किस्सों पर प्रकाश डाला और अपने आसपास के परिवेश की चर्चा की। उन्होंने कहा कि जीवन हमेशा एक जैसा नहीं होता है। जीवन एक साइकिल की तरह होता है जो हमेशा चलते रहता है। जिसके बाद उन्होंने बताया की पढ़ना एक्सप्लोर करना होता है। पढ़ने से हमारे दिमाग की कल्पना और बुद्धि के क्षितिज अपार हो जाती है।

उन्होंने अपनी जीवन यात्रा की बात करते हुए बताया कि वह बहुत छोटी उम्र से ही लाइब्रेरी में जाकर किताबें पड़ती थी पढ़ते पढ़ते ही उन्होंने लिखना भी शुरू किया। सबसे पहले उन्होंने कविताएं लिखी उसके बाद उन्होंने आलोचनाएं लिखी और फिर अभी कविताएं लिख रही हैं। उन्होंने अपनी बाल्यावस्था का उदाहरण देते हुए बताया कि किस प्रकार उन्होंने लिखना प्रारंभ किया। आरंभ से ही उन्हें स्त्री विषय पर लिखना ज्यादा पसंद था। हमारे समाज में स्त्रियों को पराया समझा जाता है। जिसको लेकर उनके मन में नए–नए विचार उत्पन्न हो रहे थे उन्होंने उसे अपनी लेखनी में शामिल किया।

उन्होंने कहा कि अध्ययन से हम बहुत कुछ पा सकते हैं हमें खूब

अध्ययन करना चाहिए। अध्ययन करने के बाद अपने आप से सवाल करना चाहिए और उस सवाल का जवाब भी अपने आप से ही पूछना चाहिए। इसी के साथ–साथ समय का भी ध्यान रखना चाहिए। हमें समय के अनुसार चलना चाहिए जो समय के अनुसार चलता है वहीं जीवन में आगे बढ़ पाता है और सही मुकाम हासिल कर पाता है।

शख्सियत से मुलाकात : सुरेश चंद्र शुक्ल

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज की हिंदी साहित्य सभा मंथन द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में शख्सियत से मुलाकात' नामक श्रृंखला कार्यक्रम के अंतर्गत एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। इसी श्रृंखला के भाग छह का आयोजन 10 अप्रैल, 2022 को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे) (कवि, नाटककार एवं मीडिया विशेषज्ञ) थे।

गत इक्कीस वर्षो से नार्वे में हिंदी की पत्रिकाओं 'परिचय' और 'स्पाइल' (दर्पण) का संपादन कर रहे है। वे नॉर्वे के बारे में बताते हुए कहते हैं कि नॉर्वे की संस्कृति भारतीय संस्कृति से प्रभावित है। वह 'परिचय' नामक पत्रिका के संपादक रहे हैं। जिसका हिंदी एवं पंजाबी में संपादन किया जाता था। उनका मानना है कि भारत में साहित्य के मामले में हर कोई आलोचक बन जाता है जिसे आलोचना नहीं भी आती वह भी आलोचक बन जाता है। वह शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से नार्वे गए थे। नार्वे में पंजाबी, तमिल, उर्दू, हिंदी बोली जाती है। वहां के निवासी पंजाबी और हिंदी पढ़ना चाहते हैं। वह लखनऊ में जब नौवीं कक्षा में पढ़ते थे तभी से उन्होंने लिखना शुरू किया था। यह उनका पहला पड़ाव था। उनकी माँ तुलसीदास कृत रामचरितमानस पढ़ा करती थी। शायद यही वह कारण है जहां से उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली।

एक लेखक होने के नाते उनके आसपास घटी घटनाओं, सामाजिक तरीके से जो प्रथाएं चल रही हैं उन्हीं से प्रभावित होकर अपने शब्दों में उन घटनाओं को उचित स्थान दे कर अपने शब्दों में ढ़ाल लेते हैं। उन्होंने अपनी मन मंदिर में नये देवता का कुछ अंश भी सुनाया। उन्होंने अपनी आने वाली कहानी जिसका नाम मिट्टी के देवता जो कि किसान आंदोलन पर आधारित है उस पर भी चर्चा की। उनके मुताबिक लेखक को लिखने में रुचि का होना बहुत जरूरी है। इस मौके पर उन्होंने अपनी फिल्मों के बारे में बताते हुए कहा कि 1969 से 1972 तक लगभग सभी फिल्में देखी है जो कि राजेश खन्ना का समय भी कहा जा सकता हैं। उन्हें शक्ति कपूर, आशा भोसले और अमिताभ बच्चन जैसे उच्चतम वरिष्ठ लोगों से मिलने का अवसर भी मिला। वह महात्मा गांधी से अत्यंत प्रभावित थे।

मैं दिल्ली हूँ

मैं दिल्ली हूं
दिलवालों की दिल्ली
मतवालों की दिल्ली
मैं भारत का दिल हूं

मैंने समेट रखा है सदियों का राज
शहीद हुए लोगों का दर्दए वो तख्त-ओ-ताज

मैंने देखी है गुलामी की शाम
मैंने आजादी की सुबह भी देखी है

मैंने देखा है सत्ता का उजड़ना
मैंने वक्त के साथ इस शहर का सँवरना भी देखा है

मैंने पुरानी इमारतें भी देखी हैं
मैंने खुद का बदलना भी देखा है

मैंने हर मौसम की बारिशए सर्दीए धूप भी देखी है
उस गरीब की आँखों में मैंने भूख भी देखी है

मैंने लोगों को रोते और हँसते देखा है
मैंने कई बस्तियों को यहां बसते भी देखा है

मैंने देखा है दहशत का मंजर
मैंने खुशी का आलम भी देखा है

मैंने इमारतों और सियासत का नूर भी देखा है
और खुद को होते मशहूर भी देखा है

मैं दिल्ली हूं
मैं भारत का दिल हूं।

-भावना अवस्थी

भारत में हर वर्ष बाढ़ का कहर

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां विभिन्न प्रकार की छोटी– बड़ी नदियाँ, तालाब हैं जो हमारे गाँव, खेत और शहरों से होकर प्रवाहित होती हैं। वर्षा ऋतु में कुछ बड़ी नदियों का जलस्तर उफान पर आ जाता है जिसके कारण कई क्षेत्रों में बाढ़ का प्रकोप देखने को मिलता है। बढ़ते जलस्तर के कारण हर वर्ष लाखों रूपये और जानमाल का नुकसान होता है। बिहार भारत का सबसे अधिक बाढ़ प्रभावित राज्यों में से एक है। जिसमें 76% से भी अधिक क्षेत्र हर वर्ष बाढ़ से प्रभावित होते है। इसके अलावा पंजाब और उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्र है जहाँ पर हर साल बरसात में पड़ोसी देश से आए पानी से फसलों का काफी नुकसान उठाना पड़ता है। वही असम, पश्चिम बंगाल और तटीय क्षेत्रों में हर साल बरसात में बाढ़ के कारण आम जनजीवन प्रभावित होता है। वर्ष 2004 में बिहार के 20 जिलों में आई बाढ़ ने लगभग 2.10 करोड़ लोगों को प्रभावित किया साथ ही लगभग 3272 पशुओं और 885 लोगों की जान ले ली थी।

2005 के 26 जुलाई को मुंबई में हुई भारी बारिश ने पूरे देश को हिलाकर रख दिया था। मुंबई में औसतन 242 एमएम बारिश होती है, लेकिन उस दिन मौसम विभाग के टीम ने 24 घंटे में शहर में 994 एम.एम. वर्षा दर्ज की। जिसने पूरी मुंबई को थमने पर मजबूर कर दिया। लोग 2– 2 दिन तक ऑफिस से घर नहीं जा सके। जो जहां था, वहीं ठहर गया।

इसके अलावा 2005 में गुजरात ने भी अपने इतिहास की भीषणतम बाढ़ देखी। बहुत कम समय में हुई 505 एमएम बारिश के बाद करीब लगभग 7200 गाँवों में पानी घुस गया और लगभग 1.76 लाख लोगों को अपना घर छोड़कर ऊँचे सुरक्षित स्थानों पर जाने को मजबूर होना पड़ा।

2008 – एक बार फिर बिहार में लगभग 23 लाख लोग बाढ़ की चपेट में आए, जिनमें से 250 तो मौत के मुँह में समा गए। कुल 8.4 लाख हेक्टेयर जमीन पूरी तरह धुल गई और 3 लाख मकान क्षतिग्रस्त हो गए।

2010 – लद्दाख में छह विदेशियों सहित लगभग 255 लोग बाढ़ की भेंट चढ़ गए। 2012 ब्रह्मपुत्र में आई बाढ़ ने न केवल 60 लोगों को बेघर किया बल्कि 124 लोगों की जान भी ले ली। साथ ही काजीरंगा राष्ट्रीय पार्क में 540 जानवर भी काल कवलित हो गए।

2014 – जम्मू.कश्मीर में आई भीषण बाढ़ में 280 लोग मारे गए और करीब 400 गांव पूरी तरह डूब गए।

2015 –चेन्नई ने पिछले 100 सालों की सबसे भीषण बाढ़ देखी। जब दिसंबर के पहले हफ्ते में हुई करीब 500 एम.एम. बारिश के बाद पूरा शहर डूब गया। इस बाढ़ से 20,000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ।

ग्लोबल वार्मिंग तथा जलवायु परिवर्तन के कारण ये समस्या और बढ़ती जा रही है। अंधाधुंध औद्योगीकरण तथा अनियंत्रित शहरीकरण इस समस्या को और बढ़ाता जा रहा है। सरकार ने बाढ़ नियंत्रण के लिए हर जिले मे राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन कार्यालय स्थापित कर रखा है। इसके अलावा राष्ट्रीय आपदा मोचन बल का गठन भी कर रखा है परंतु समस्या उतनी ही जटिल बनी हुई है। सरकार को एक बरसात जल प्रबंधन टीम गठित कर लेना चाहिए जिससे बरसात के पानी को इकट्ठा करके या उन क्षेत्रों की तरफ नहरों के माध्यम से बरसाती पानी को पहुंचाना चाहिए जहाँ बरसात कम होती है। इस विधि से बरसात के दिनों में बाढ़ की समस्याओं से भी निजात मिलेगी साथ ही देश के हर जल संकट क्षेत्र तक पानी भी पहुंच जाएगा। नदियों के जल का व्यवस्थित उपयोग तथा सतत विकास करने से ही इस समस्या से निदान पाया जा सकता है।

–सतपाल सिंह

विश्व भर में फैलेगा हिंदी का परचम

भाषा एक राष्ट्र की पहचान होती है, और उस राष्ट्र में रहने वाले नागरिकों को इस जटिल संसार में रहने योग्य बनाती है। लेकिन वैश्वीकरण और उदारीकरण की इस हवा ने वर्तमान दौर में मनुष्य को इतना प्राभावित कर दिया है कि वो अपनी भाषा को दरकिनार कर दूसरी भाषा के प्रति अपना लगाव जताने लगे है। अपने बचपन से ही हम सब एक बहुत पुरानी कहावत सुनते आए है, परिवर्तन संसार का नियम है, और ये कहावत इस संसार में प्रासंगिक भी है, लेकिन परिर्वतन का अर्थ ये नहीं हैं, की आप अपनी मातृभाषा का सम्मान करना ही भूल जाए।

यह एक बहुत गंभीर समस्या है, जो इस आधुनिक युग में भारतीय नागरिक विशेषकर युवाओं में हिंदी को लेकर

दिखाई पड़ती है।

समय परिवर्तनशील है, जिसके साथ हर एक चीज बदलती है, व्यक्ति, उसकी विचारधारा, यहाँ तक की इस संसार में जो कुछ भी जो जीवित है, और अजीवित है, वो सब कुछ परिवर्तित होता है और इस परिर्वतन की कड़ी में भारत के नागरिकों के विचार हिंदी को लेकर नकारात्मक रूप लेने लगे हैं। लोगों का मानना था और अभी भी हैं कि हिंदी भाषा को लेकर अब कोई संभावनाएँ नहीं बची है। जो भी संभावनाएँ हैं, वह सिर्फ अंग्रेजी के बलबूते पर हासिल की जा सकती है। कई नागरिकों को हिंदी भाषा का उच्चारण करने पर और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न होने पर अपमान झेलना पड़ता है। एक हिंदी माध्यम का छात्र या हर वो व्यक्ति जो हिंदी के क्षेत्र से संबंधित है, उनको ये जताया जाता है, कि वो अनपढ़ हैं,और उनका इस दुनिया में कोई खास महत्व नहीं हैं, लेकिन इस विचारधारा को गलत साबित करते हुए हिंदी ने उस सम्मान को अर्जित किया, जिसकी वो हकदार है। गुरुवार 26 मई 2022 भारत के लिए वो ऐतिहासिक तारीख बन गई है, जिसे भविष्य में सुनहरे अक्षरों को में लिखा जायेगा, या फिर, यह कहिए की लिख दिया गया है। दरअसल हिंदी की मशहूर उपन्यासकार और कवियत्री गीतांजलि श्री को उनके उपन्यास (रेत समाधि) के लिए अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार से नवाजा गया है। यह पहली बार है, जब हिंदी भाषा और हिंदी उपन्यास को इतना बड़ा सम्मान मिला है, जो हिंदी भाषा का अधिकार भी है। कहते हैं कि भाषा किसी व्यक्ति की पहचान, उसकी शिक्षा, उसका स्तर, उसके व्यक्तित्व से परिचित कराती है और अब माननीय गीतांजलि श्री के हिंदी उपन्यास ने अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत के व्यक्तित्व और हिंदी भाषा के महत्व को दर्शाया है। उसकी प्रतिष्ठा का विश्व भर में प्रचार किया है। भारत के लिए यह बहुत ही खुशी और हिंदी भाषा के लिए सम्मान की बात हैं, क्योंकि हिंदी को कभी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इतना बड़ा सम्मान हासिल नहीं हुआ लेकिन अब यह सम्मान भारत के नागरिकों में हिंदी के प्रति नकारात्मकता, गलत विचार और नफरत की बेड़ियों को तोड़ देता है और उन्हें अवगत कराता है, कि हिंदी को लेकर संभावनाएँ समाप्त नहीं हुई है, बल्कि ये तो एक सुनहरी सुबह की शुरुआत है।

–हिमांशी राजपूत
हिन्दी पत्रकारिता

सिकुड़ती ऑनलाइन शिक्षा

कोरोना की कड़ी मार में बीते 2 वर्ष शिक्षा प्रणाली पूरी तरह ऑनलाइन कर दी गई। जिस कारण ऑनलाइन एजुकेशन प्लेटफार्म ने शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने में अपनी अहम भूमिका अदा की हैं। हालांकि धीरे – धीरे सामान्य होती स्थिति में शिक्षा व्यवस्था भी ऑफलाइन होने लगी। जिस कारण बड़े–बड़े ऑनलाइन एजुकेशन प्लेटफॉर्म जिनमें बायजूस, अनएकेडमी, वेदांतु जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म भी सिकुड़ने लगे जिस कारण मजबूरन इन्होंने हजारों कर्मचारियों की छटनी भी की। अब वह भी अपने ऑफलाइन सेंटर की राह पर चल पड़े है।

दरअसल ऑनलाइन शिक्षा में कई खामियां भी रही। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे 2021 की रिपोर्ट बताती है किए 78% बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई बोझ लगती है। 28% बच्चों ने माना कि ऑनलाइन सीखने में परेशानी होती है। 24% के पास कोई डिजिटल डिवाइस उपलब्ध नहीं। हालांकि कुछ प्रतिशत बच्चों ने कोरोना काल के दौरान घर पर ऑनलाइन पढ़ाई करना अच्छा लगा।

'ऑनलाइन से क्यों बेहतर है ऑफलाइन'

ऑफलाइन शिक्षा से बच्चों का शिक्षक से सीधा संपर्क होता है। फीडबैक भी सटीक मिलता है। कक्षा में बच्चे शिक्षक के सामने अनुशासन व कम्युनिकेशन आदि स्किल प्रैक्टिकली सीख पाते हैं। नकल की संख्या भी काफी कम रहती है साथ ही सीधा संवाद स्थापित होने से कई बार बच्चा बिना कुछ बोले भी अपने हाव– भाव से सारी बातें शिक्षक को बोल जाता है। ऑनलाइन में बच्चे ज्यादातर थ्योरी तक ही सीमित रहते हैं मगर ऑफलाइन में थ्योरी के साथ–साथ प्रैक्टिकल चीजें भी बेहतर ढंग से सीख पाते हैं। चीजों को लंबे समय तक याद रख पाते हैं।

लम्बे समय से ऑनलाइन का प्रयोग करते करते छात्र कई समस्याओं के शिकार भी हुए जैसे स्वास्थ्य पर प्रभाव, पुस्तक से लंबे समय तक पढ़ने में कठिनाई, पढ़ाई के दौरान आलस आना, दूसरों की सहायता से अपना होमवर्क करवाना, डिजिटल डिवाइस की लत लगना इत्यादि। हालांकि भविष्य में पूरी पढ़ाई ऑफलाइन ही हो यह मुमकिन नहीं, आवश्यकता अनुरूप दोनों का सामंजस्य बिठाना होगा और भी बहुत सी खामियों को दूर करके आने वाली पीढ़ियों के अनुरूप शिक्षा को विकसित करना होगा।

–मोहम्मद हमजा

लोगों के मन में नारीवाद के प्रति द्वेष का आगमन

नारीवाद एक समसामयिक विषय है, जबकि इसकी जड़ें सदियों पहले से फैली हुई हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात जहां नारी की पूजा की जाती है। उसका सम्मान किया जाता है, वहां देवताओं का वास होता है। दिल्ली विश्वविद्यालय सबसे प्रगतिशील शैक्षणिक स्थानों में से एक है जहाँ सभी के साथ जाति, लिंग समुदाय, आर्थिक स्थिति और नस्ल की सीमाओं से परे समान व्यवहार किया जाता है। कम से कम यही एक धारणा है जब हम एक अकादमिक समुदाय में शामिल होते हैं जो देश में प्रतिष्ठित है। विद्वान व्यक्तियों के इस संघ के अल्मा मेटर का पद रखने के विशेषाधिकार के बावजूद, किसी न किसी तरह से हम सभी कुछ रूढ़ियों या नीच भेदभाव के अधीन रहे हैं। तो अगर शिक्षा कुंजी नहीं है तो क्या है? संवेदीकरण। मीडिया में एक लिंग को नीचा दिखाने और साथ ही उसकी समानता के लिए संघर्ष करने की दोहरायी जाने वाली नीति देश के आम लोगों को भ्रमित करती है। एक कॉलेज की छात्रा के रूप में यदि लगातार नहीं तो काफी दोहराव से मैंने छात्रों को अनजाने में स्वछंद नारीवाद वाक्यांश का उपयोग करते हुए सुना है। एक उपकरण जो लैंगिक समानता को कम करता है और कई बार महिलाओं के मौलिक अधिकारों पर सवाल उठाने के लिए इसका अत्यधिक शोषण किया जाता है। हाल ही में एक कैब ड्राइवर के साथ हुई घटना में जहां एक महिला को लिंग के नाम पर अपनी गलती को बचाते हुए देखा गया था। जिसे हम एक बयान घटना के रूप में उद्धृत करते हैं। हालांकि ये घटनाएं बहुत कम होती हैं लेकिन ये नारीवाद के बड़प्पन में एक स्थायी सेंध लगाती हैं।

नारीवाद एक ऐसी अवधारणा है जो लिंग की समानता को बढ़ावा देती है। एक असीम आदर्श अवधारणा जो किसी भी तरह से मातृसत्ता या पितृसत्ता को बढ़ावा नहीं देती है। जैसा कि प्रचलित दुनिया में एक लिंग का अधिक प्रभुत्व था, क्रांति की वर्तमान लहरें वित्तीय स्वतंत्रता, संसाधनों का लाभ उठाने के लिए समानता और समाज में समान स्थिति के मामलों में महिलाओं के उत्थान का समर्थन करती हैं। इसलिए इस पहल का हिस्सा बनने की आवश्यकता को महसूस करना बाध्यकारी और अनिवार्य है। यदि कम से कम ऐसी घटनाओं का हवाला देते हुए महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन नहीं है जिन्हें नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। लिंग में असमानता के विशाल विस्तार को केवल सशक्तिकरण के साथ ही समाप्त किया जा सकता है और यह पुरुषों और महिलाओं के अधिकारों के समान संवेदीकरण के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

–दीपा वर्मा

संरक्षक : प्रो. गुरमोहिंदर सिंह (कार्यवाहक प्राचार्य)
मार्गदर्शिका : डॉ. अंजु बाला
संपादक : डॉ. सविलता यादव **छात्र–संपादक** : शिवम रंजन, सतपाल सिंह
सहयोगी : मो. हमजा, अभिषेक, अमनदीप, प्रेरणा किरण